आध्यात्मिक उन्नतिका सर्वांग विकास हेतु वडताल संस्थानका त्रिमासिक

स्वामिनारायण संदेश

वर्ष - १ अंक - २
जुलाई - २०१८

चंदन के शृंगार में
श्रीहरिकृष्ण महाराज

वडतालधाम में गुरु पूर्णिमा के पावन अवसर पर ईष्टदेव श्री हरिकृष्ण महाराजका पूजन करते
प.पू.ध.धू.आचार्यश्री राकेशप्रसादजी महाराजश्री एवं इस पावन पर्व पर प.पू.आचार्य महाराजश्रीका पूजन करते
वडतालधाम के संतगण और हरिभक्त । दिनांक २७/७/२०१८

आध्यात्मिक उन्नतिका सर्वांग विकास हेतु वडताल संस्थानका त्रिमासिक

स्वामिनारायण संदेश

क्रम लेख सामग्री एव लेखक श्रीपृष्ठ

१. आचार्यवचन

प.पू.ध.धू. आचार्यश्री राकेशप्रसादजी महाराजके आशिष ०४

२. खानदेश में स्वामिनारायण संप्रदाय के बीज ०६

- स्वामी धर्मप्रकाशदास (वडताल)

३. तीर्थप्रिय घनश्याम ०९

- पंकज घनश्याम शाह (इन्दौर)

४. वडतालधाम महिमा १०

-धर्मप्रकाश स्वामी (भूमेल-वडताल)

५. श्री हरिकी अनन्य शरणागति १२

- स्वामी पूर्णवल्लभदास (वडताल-कंडारी)

६. श्री स्वामिनारायण संप्रदायकी राजधानी वडतालधाम १५

स्थित श्री स्वामिनारायण मंदिर : निर्माण गाथा

- हरेन्द्र प्र. भट्ट

७. जीवन का ध्येय १९

- पार्षद श्री लालजी भगत (ज्ञानबाग-वडताल)

८. सत्संग समाचार (तस्वीर समाचार) २०

- संकलन : साधु श्यामवल्लभदास (वडताल)

प्रकाशित कर्ता

श्री स्वामिनारायण मंदिर, वडताल संस्थान्

ता. नडियाद, जि.खेडा, गुजरात, ३८७ ३७५

Ph. +91 268 - 2589728,776

email : vadtaldhamvikas@gmail.com

Web Site : www.vadtalmandir.org

वर्ष - १ अंक - २, जुलाई - २०१८

- : प्रेरणा :-

श्री लक्ष्मीनारायणदेव पीठाधिपति

प.पू.ध.धू.१००८ आचार्यश्री राकेशप्रसादजी महाराज

-: स्वामिनारायण संदेश :-

हिन्दी त्रिमासिक पत्रिका

- : प्रकाशक :-

प.पू.सद्.शा.श्री घनश्यामप्रकाशदासजी स्वामी

मुख्यकोठारीश्री - वडताल मंदिर

-: मेनेजींग तंत्रीश्री :-

डॉ. शास्त्री संतवल्लभदास - Ph.D

शास्त्री पूर्णवल्लभदास

-: तंत्रीश्री :-

श्री हरेन्द्र पी.भट्ट - विद्यानगर

-: मूल्य :-

वार्षिक : १५० पंचवार्षिक : ६००

अस्मदीयम्

आराध्य इष्टदेव भगवान श्रीस्वामिनारायण कि प्रिय भूमि 'वडतालधाम' से आप 'श्री स्वामिनारायण संदेश' के माध्यम से संलग्न हो रहे है। आध्यात्मिक उन्नति की नींव शरणागति-द्रढ निर्विकल्प निश्चय है। निश्चिय की नींव भागवत संत की संगति है। प्रत्येक मुमुक्षु भगवत्प्रपति के माध्यम से भवसागर उत्तीर्ण होता है। परंतु जब तक उत्तम संत का उच्च श्रद्धा के साथ सेवा-समागम नहि होता तब तक परब्रह्म परमात्मा का यथार्थ ज्ञान नहि होता। और जब तक परमात्मा का यथार्थ ज्ञान नहि होता, तब तक पंच विषय की निवृत्ति नहि होती और जब तक पंचविषय की निवृत्ति नहि होती तब तक सत्संग का यथार्थ फल प्राप्त नहि होता। हम सत्संग कराता है। उस में कोई शंका नहीं है, किन्तु उसका फल क्या मीलता है, कैसा-कब-कीतना मीलता है, वह स्वयं से अधिक कोई नहि जानता।

आज हम भगवत्कृपा से संप्रदाय की सर्वोच्च आस्था केन्द्र 'वडतालधाम' से संलग्न है। उसी के माध्यम से आध्यात्मिक उन्नति कर रहे है। इस पत्रिका के माध्यम से हम आत्मशुद्धि से परमप्राप्ति प्राप्त करें ऐसी प्रार्थना।

कल्पवृक्ष की भांति मनोवांछित फलदायक सत्संग से हमें क्या कैसे कब प्राप्त करना चाहिए। ए सारे प्रश्न स्वयं से पूछना है। स्वयं से उत्तर प्राप्त करना है। यहि ऊर्ध्वगति का श्रेष्ठ मार्ग है।

आचार्यवचन

प.पू.ध.धू. आचार्यश्री राकेशप्रसादजी महाराजके आशिष

हरिकृष्ण चरण नख चन्द्र छटा बिन सब जगमांही अंधेरा रे,
हरिकृष्ण घनश्याम नारायण रे, तुं रट ले मन मेरा रे ।

प्रेमानंद स्वामी की इस पंक्तियों में हरिकृष्ण महाराज की महिमा का गान किया है । अनंतकोटि ब्रह्मांडनायक पुरुषोत्तम नारायण की नंद संतो ने बहुत ही आदरभाव से सेवा-अर्चना की है। यह संतो ने पुरुषोत्तम नारायण की सेवा करते समय जो अनुभूति हुई है, उसका गुणगान किया है और उसकी अनुभूतियाँ हम इस पंक्तियों द्वारा चरितार्थ करते हैं।

पूर्ण पुरुषोत्तम नारायण निज अक्षरधाम से आज पृथ्वीलोक पर स्थूल स्वरूप लेकर यहां बिराजमान हुए है । स्वयं अक्षरधाम में अनंतकोटि सूर्य समान स्वरूप में तख्त पर बिराजमान रहे है । वह दोनों स्वरूपों कि समानता के प्रतिकरुप भगवान स्वामिनारायण ने अति करूणाकर वडताल में साक्षात निज स्वरूप में श्री हरिकृष्ण महाराज की प्रतिष्ठा कर अपने सभी अनुयायीओं को धन्य कर दिया है, उद्धार कर दिया है।

भगवान जब इस धरा पर अवतरित होते है तथा मनुष्यलीला करते हैं तब मूल हेतु जीवात्मा को अपने स्वधाम ले जाने का होता है। जीव इस कलीयुग में आता है । अनेक भवबंधन में से पसार होकर आता है तब सरलतापूर्वक उसका कल्याण हो और नित्य भगवान के चरणारविंद प्राप्त करे तथा कल्याण का सुख प्राप्त करे उस उद्देश्य से भगवान इस धरा पर अवतरित होते है। भगवान स्वामिनारायण दिव्य परमहंसो एवं संतो को भी अपने साथ लाकर इस दिव्य संप्रदाय की स्थापना की है। वडताल के वचनामृत में भादरण गांव के भक्तराज भगु पाटीदार श्रीजी महाराज से प्रश्न करते हैं कि, हे महाराज ! इस जीवात्मा के कल्याण की बात आप कर रहे हैं तो इस जीवात्मा का कल्याण किस तरह हो ? तब श्रीजी महाराजने कहा कि-भगवान जब पृथ्वी पर

प्रगट हो तब उनके दर्शन मात्र से तथा भगवान पृथ्वी पर प्रत्यक्ष न हो तब भगवान से मिलाप किए हुए संतजन है, उनका समागम कर जीवात्मा का कल्याण होता है, किन्तु भगवान इस भूलोक में बिराजमान न हो भगवान से मिलाप किए हुए संतजन भी न हो तो उस वक्त उन्हों ने स्थापित कि हुइ मूर्ति तथा उनके द्वारा प्रस्थापित स्वरूप से अवश्य कल्याण होता है।

भगवान स्वामिनारायण ने करुणाकर स्व हस्तकमल से निज स्वरूप को पूरे ब्रह्मांड में जो कहीं प्रस्थापित किया है तो वह वडतालधाम में एकमेव हरिकृष्ण महाराज के स्वरूप में प्रतिष्ठा कर भक्तजनों का उद्धार कर दिया है तथा उनका नाम जो न्यालकरण है वह सार्थक किया है।

हम सनाथ है की, हम हरिकृष्ण महाराज के सानिध्य में है । हरिकृष्ण महाराज की दिव्यमूर्ति के लिए प्रेमानंद स्वामी, ब्रह्मानंद स्वामी आदि महान नंद संतो ने काव्य, स्तुति, ग्रंथो के माध्यम से भगवान की अपरंपार महिमा का गान किया है। प्रेमानंद स्वामी की यह पंक्तिया उनका श्रेष्ठ उदाहरण है।

हम सब श्रीजी महाराज ने स्थापित किए मूल संप्रदाय के आश्रित हैं और श्रीहरि ने प्रस्थापित किए इस दिव्य संप्रदाय में श्रीहरि ने जो आज्ञा दि हो उसका पालन करना भक्तजनों का परम कर्तव्य है। हरिकृष्ण महाराज की महिमा का गान करे तो शायद पुरा जीवन बित जाए फिर भी उनकी महिमा पूर्ण न हो जाए । ऐसे अनंतकोटि ब्रह्मांडनायक पुरुषोत्तम नारायण का स्वयं स्वरूप हरिकृष्ण महाराज यहां बिराजमान है। हम सबको यह ज्ञात है कि, इस स्वरूप में से कई बार प्रगट होकर श्रीजी महाराज ने अपने अग्रज भ्राता रामप्रतापभाई की जो भावना थी वह पूर्ण की है। उसी तरह भक्तजनों के मनोरथको भगवान स्वामिनारायण ने इस मूर्ति में रहकर हरिकृष्ण महाराज में साक्षात्कार होकर पूर्ण करते हैं । श्रीजी महाराज कहते हैं कि अगणोतेरा के काल के लिए पुरी में जगन्नाथजी की मूर्ति में रहकर स्वयं उस मूर्ति के नेत्रों से वहां के पुजारीयों का भाव-छलकपट देखते थे। उसी तरह हरिकृष्ण महाराज में स्वयं बिराजमान है। हम उस मूर्ति के स्वरूप का ध्यान करते हुए भगवान का सानिध्य प्राप्त करके कल्याण हो यही वर्तमान समय की मांग है।

हरिकृष्ण महाराज के बारे में जितना कहा जाए वह कम है। हमारा तो यह निवेदन है कि शयन करते, आसन ग्रहण करते, सर्वकाम करते समय हरि स्मरण करते रहे, उस न्याय से तीनों अवस्था में शुभ और अशुभ सभी प्रवृत्तियों में हरिकृष्ण महाराज का ध्यान हृदय में रहेगा तो हरिकृष्ण महाराज आपका कल्याण अवश्य करेंगे।

खानदेश में स्वामिनारायण संप्रदाय के बीज

स्वामी धर्मप्रकाशदास गुरु स.गु.शा.श्री धर्मप्रसाददासजी (खानदेशी), वडताल

भारत वर्ष के महाराष्ट्र राज्य में खानदेश प्रदेश अपनी भौगोलिकता, धार्मिकता, संस्कारिता और उच्च आदर्शो से प्रख्यात है।

अठाहरवीं शताब्दी में समग्र गुजरात में स्वामिनारायण संप्रदाय के बीज अंकुरित हो चुके थे। भगवान श्री स्वामिनारायण की आज्ञा से संतो भारत वर्ष के विभिन्न प्रदेशो में विचरण करते हुए श्रीहरि की पहचान, उच्च जीवन शैली, व्यसन मुक्ति इत्यादि से सामाजिक उत्थान एवं संप्रदाय का प्रचार प्रसार करते थे। इसी समय में खानदेश में भी स्वामिनारायण संप्रदाय के बीज बोए गये, जो आज वटवृक्ष की तरह फैलकर भक्तो को मीठी छाया का परमानंद दे रहा है।

खानदेश के सावदा गाँव में भाउजीभाई नामक एक ब्रह्मक्षत्रिय रहते थे। वह पंढरपुर के विठोबाके परम भक्त थे। भाउजीभाई श्रेष्ठ मुमुक्षु थे। विठ्ठलनाथजी के प्रति भाउजीभाई की अपार श्रध्धाथी प्रति पूर्णिमां वह विठ्ठलनाथजी कें दर्शन के लिए पंढरपुर जाते थे। इस नियम को २२ साल हुए थे।

नियम के अनुसार एक बार पूर्णिमा के दिन भाउजीभाई पंढरपुर में भगवान विठोबा के दर्शन के लिए गए थे। उन्होंने बडी श्रद्धा, प्रेम से विठोबा के दर्शन किए। उन्होंने मन में संकल्प किया, 'मेरा मोक्ष कैसे होगा ? इस प्रश्नका उत्तर मिलने पर ही मैं मंदिर के द्वारसे नीचे उतरुंगा।' भगवान विठोबा से उत्तर की प्रतिक्षा करते करते संध्या समय हुआ।

सायंकाल में मंदिर बंध करते वक्त पुजारीजी ने भाउजीभाई को बहार नीकलने को कहा।

भाउजी बोले, 'विठोबा मेरे साथ बात करके जब मेरे प्रश्न का उत्तर देंगे तब मैं जाउंगा।'

पुजारी बोले, 'भाई ! यह तो मुर्ति है, जो भला कैसे बोलेगी?'

भाउजीभाई बोले, 'भगवान बोल ही नहीं सकते तो मेरा मोक्ष कैसे करेंगे ?'

पुजारी और भाउजीभाई कें बीच संवाद चल रहा था, तब साक्षात विठ्ठलनाथजी मुर्ति में प्रगट हुए, और बोले, 'भाउजी ! आपकी भक्ति, श्रद्धा और सेवा से मै प्रसन्न हुआ, आप जो चाहो वो मांग लीजिए, मैं नि:शंक दुंगा।'

भाउजीभाई बोले, 'हे प्रभु ! यदि आप मुझ पर प्रसन्न है तो, आप मुझे

मोक्ष प्रदान करें।'

विठ्ठलनाथजी उतर देते हुए बोले, 'आत्यंतिक मोक्ष के प्रदाता तो भगवान श्री स्वामिनारायण और उनके परमहंस है। साम्प्रत समय में प्रगट प्रमाण स्वामिनारायण भगवान इस धरातल पर अनेकानेक मुक्तो के साथ परिभ्रमण कर रहे है। भगवानकी आज्ञा सें उनके चार परमहंस सत्संग हेतु बुरहानपुर आए है। शास्त्रोक्त संत लक्षणयुक्त वे परमहंस तापी नदी के पावन तट पर सतीघाट पर निवास करते है। भाउजी। तुम वहा जाकर उन संतो के दर्शन करो, और वे संत जैसा बोले वैसा करो, तुम्हारा मोक्ष अवश्य होगा।' इन वचनो को बताकर भगवान विठ्ठलनाथजी अद्रश्य हो गए।

भगवद् दर्शन से भाउजीभाई अत्यंत आनंदित हुए। विठोबा के आदेशानुसार उन्हों ने बुरहानपुर जानेका निश्चय किया। भाउजीभाई अपने घर न लौटकर सीधा ही बुरहानपुर की ओर प्रयाण करते है।

उसी समय बुरहानपुर में नरनारायणानंद स्वामी, कृष्णानंद स्वामी, पूर्णानंद स्वामी और चैतन्यानंद स्वामी यह चार संत आए थे। श्री हरी की आज्ञा में सत्संग यात्रा प्रयाण पूर्व भगवान श्रीहरि ने इन चारो संतो को एक छडी (लकडी) देते हुए कहा, 'इस छडी का लाल भाग किसी को भी स्पर्श होगा तो उसे समाधि होगी और इस छडी के पीले भाग के स्पर्श से समाधि में से मुक्ति मिलेगी।'

श्रीहरि के वचन अनुसार ये संत भक्तों को समाधि करवाते थे। लोगों को भगवान के दिव्य अक्षरधाम एवं जमपुरी की बाते कहते थे। दुराचारी को सदाचारी बनाते थे। जमपुरी और अक्षरधाम यह तो सब अंधश्रद्धा है एसा कहनेवालो को, संत छडी का स्पर्श करवा के समाधि द्वारा धाम एवं जमपुरी प्रत्यक्ष दिखाते थे।

बुरहानपुर में संतोने छडी का स्पर्श करवाकर १०-१२ लोगों को समाधि करवाई थी, उसी समय ब्रह्मक्षत्रिय भाउजीभाई वहा आ पहुंचे। समाधिमुक्त होने पर वह लोग संतो को कहने लगे, 'हे महाराज! आप साक्षात् भगवान ही हो।'

उनके वचन सुनकर संत बोले, 'हम भगवान नहीं है, हम भगवान के दास है। साक्षात् पुरुषोत्तमनारायण, सर्वावतारी, सर्वकारण ऐसे श्री सहजानंद स्वामी भगवान है।' ऐसे अमृत वचन सुनकर भाउजीभाई तथा अनेक मनुष्यो को सत्संग हुआ। संत समागम से भाउजीभाई श्रीहरि के अनन्य उपासक बने।

सत्संग विचरण करते हुए संतो के साथ भाउजीभाई गढपुर आए, जहां भगवान श्री स्वामिनारायण अगिणत संतो, मुक्तो के साथ बिराजमान थे। सर्वावतारी श्रीहरी ने भाउजीभाई को क्रमशः कैलास, बैकुण्ठ, श्वेतद्वीप, गोलोक और अक्षरधामका समाधि द्वारा दिव्य दर्शन करवा के सर्वोपरी अचल निश्चय करवाया।

भाउजीभाई के तन, मन, प्राण को गढपुर में स्वामिनारायण भगवान के सर्वोपरी निश्चय का ऐसा रंग लगा, जो कभी नाश न हो। अहर्निश भगवान का स्मरण, संतो-भक्तों की सेवा में कई दिन पसार हो गए।

स्वामिनारायण भगवान ने भाउजीभाई को आज्ञा की, 'भगत! आप अभी खानदेश जाइए। खानदेश निवासियो को हमारे चरित्रो को श्रवण करवाए और सभी जनो को सत्संग करवाईए।'

भाउजीभाई श्रीहरी की आज्ञा से खानदेश में अपने गांव सावदा आए। उनके एक संबंधी बुरहानपुर निवासी थे, जो दैवी और मुमुक्षु थे। उनको श्रीहरी को महिमां एवं स्वानुभव कथन से सत्संग कराया।

बाद में सातोद गांव गए। वहां भी स्वामिनारायण भगवान के दिव्य ऐश्वर्य, प्रताप का गान करके मोतीराम पुराणी, तुकाराम पुराणी, रावजी पुराणी ईत्यादि जनो को

सत्संग कराया।

श्रीहरी की आज्ञा से पाडळसा गांव में मंजुकेशानंद स्वामी संतमंडल के साथ सत्संग हेतु पधारे। वहां रहकर उन्हों ने अनेक जनों को सत्संग कराया। मंजुकेशानंद स्वामी समर्थ कवि और सुज्ञ वैद्य थे। भक्त नथ्थु चौधरी को स्वामी नें वैद्य का ज्ञान प्रदान किया, और आशीर्वाद दिए की, 'आपके द्वारा पांडुरोग पीडित दर्दी का रोग जड-मूल से खत्म होगा और यह विद्या आपको वंश परंपरागत सिद्ध होगी।' बाद में नथ्थु चौधरी ने गांव में सत्संग का बहुत प्रचार किया।

मंजुकेशानंद स्वामी यावल गांव में आए। गांव के दैवी जीव कीर्तन के साथ प्यार से रास खेल रहे थे। उन सभी दैवी जीवो को देखकर स्वामी को बडी प्रसन्नता हुई। रास खेलते हुए भगवत्प्रेमी भक्तो को स्वामी ने भगवान कृष्ण के रुप में दर्शन दिए। उससे ग्रामजनो को सत्संग हुआ। ग्रामजनों भगवान स्वामिनारायण के आश्रित हुए।

इस तरह से मंजुकेशानंद स्वामी, अद्‌भुतानंद स्वामी, कृष्णानंद स्वामी, परमचैतन्यानंद स्वामी, कृपानंद स्वामी, बालमुकुंद स्वामी, कृष्णप्रिय स्वामी इत्यादि संत एवं सावदा के भक्त भाउजीभाइ और बुरहानपुर के शिवशा इत्यादि द्वारा खानदेश में स्वामिनारायण संप्रदाय के बीज बोए गए।

पंढरपुर में नीलकंठ वर्णी

महाराष्ट्र में चंद्रभागा नदी के पावन तट पर पंढरपुर नामक नगर है। पवित्रता, प्रसिद्धि, महान संतो की भूमि, देवों का निवास और भगवान विठोबा के अखंड निवास से पंढरपुर तीर्थक्षेत्र भारत वर्ष में सदा अग्र रहा है। लाखों यात्री साक्षात् विठोबा का दर्शन करके धन्यता का अनुभव करते है।

भगवान श्रीहरि वन विचरण दौरान उत्तर, पुर्व और दक्षिण भारत की पवित्र तीर्थयात्रा करते हुए महाराष्ट्र में प्रवेश करते है। भक्त पुंडलिक ने अपने माता-पिता की सेवा से साक्षात भगवान की प्रसन्नता, तथा सदा पंढरपुर निवास करने का श्रीहरि का वचन... इत्यादि सुवर्णांकित इतिहास सें प्रकाशमान पंढरपुर नगर में नीलकंठ वर्णी ने प्रवेश किया।

चंद्रभागा नदी के पावन तट पर पंढरपुर संत ज्ञानेश्वर, संत तुकाराम, संत नामदेव, संत निवृत्तिनाथ इत्यादि अनेक पवित्र, महान संतो की भक्ति भूमि बनी है।

चंद्रभागा नदी में स्नान और प्रतिदिन विठोबा का दर्शन करते हुए नीलकंठ वर्णी ने पंढरपुर गांव से बाहर पेशवा के खेत में निवास किया। भगवतकृपा सें भिक्षा में जो अन्न मिले उसीसे नीलकंठ वर्णी भोजन करते थे। जिस दिन भिक्षा न मिले उस दिन फल, पुष्प, पानी, पत्र ग्रहण कर लेते।

गांव में मंदिर से थोडी दुरी पर पीपल कें वृक्ष की छाया में बैठ कर मनमोहक, आकर्षक, सुंदर, पावनकारी हास्य मुद्रा सें आवागमन करनेवाले भक्तों को दर्शन देकर धन्यता प्रदान करते थे। नीलकंठ के दर्शन से लौह चुंबक की तरह आकर्षित होकर कइ भक्त उनके सामने बैठकर आनंदामृत का पान करते थे। कई भक्त नीलकंठ का उपदेश सुनकर जीवन की धन्यता प्राप्त करते थे।

नीलकंठ वर्णी प्रतिदिन विठोबा के दर्शन करने जाते थे। संप्रदाय का सुवर्ण इतिहास बताता है की, विट्ठला नाथजी स्वयं मूर्ति में से प्रगट होकर नीलकंठ वर्णी से कंधे से कंधा लगाकर मिलते थे।

कर्या विठुबाना दर्शन, रह्या बे मास त्यां भगवन।
पछी विठुबाने पोते मळी, चाल्या वंदना करीने वळी॥

(भक्तिचिंतामणी, प्र-३५)

इस तरह नीलकंठ वर्णीने पंढरपुर में २ माह तक निवास किया। बाद में धुलिया, नासिक, पुना होते हुए अपनी यात्रा को गति देते हुए गुजरात में प्रवेश करते है।

तीर्थ प्रिय घनश्याम

- श्री पंकज शाह-ईन्दौर

तेडी गया बुरानपुर, एवु हेत हतु भरपूर । खम्भे तेडी तीरथ कराव्या, बेउ भाई छपैया आव्या ॥

बुरहानपुर एक विशेष तीर्थक्षेत्र है, जहाँ सूर्य पुत्री तापी नदी प्रवाहित है और कई धर्मो के पवित्र स्थल है । प्राचीनकाल से बुरहानपुर में दूर-दूर से दर्शन करने श्रद्धालु आते । भगवान स्वामिनारायण (जिन्हें बचपन में घनश्याम नाम से बुलाते थे) धर्म देव के पुत्र । घनश्यामजी प्रतिदिन सरयू नदी में स्नान करने जाते और संध्या वंदन करके भगवान की सेवा पूजा करते । कथा, कीर्तन, ग्रन्थ अभ्यास और तीर्थ यात्रा में घनश्यामजी विशेष रुचि रखते ।

संवत् १८४३ में घनश्याम महाराज को उनके बडे भाई रामप्रतापजी प्रेम से अपने कंधे पर बैठा कर गोकुल वृन्दावन और बुरहानपुर की यात्रा पर निकले । भगवान घनश्याम का बुरहानपुर में यह प्रथम आगमन था । घनश्यामजी ने तापी नदी को वंदन किया और महात्म्य सहित तापी स्नान किया । तापी नदी भी भगवान के चरण स्पर्श पाकर अधिक पावन हो गयी और तीर्थ का महिमा और बढ गया ।

प्रसंगोपात विश्व में केवल तापी और नर्मदा ही ऐसी नदियां है जो पृथ्वी के साथ ही अवतरित हुई है और अरब सागर में जाकर मिलती है । भगवान के पदरज से पावन तापी नदी में आज कई भक्तजन भगवान के महात्म्य के साथ स्नान करके अपने पापों से मुक्त होकर अपना जीवन सफल करते है। (सन्दर्भ - पु. च. पुष्प., ह.च.सा.)

रामप्रताप भाई की रक्षा

भगवान के प्रत्येक चरित्र शिक्षाप्रद होते है । आज के कलीयुग में जहां भाई-भाई आपस में लड मर रहे है वही भगवान के इस चरित्र से यह जानने को मिलेगा की स्वयं भगवान भी अपने बडे भाई का कितना सम्मान करते थे और बड़े भाई भी छोटे भाई से कितना प्रेम और मेल रखते थे।

घनश्यामजी के बड़े भाई रामप्रतापजी शेष नाग का अवतार होने के कारण महाबलवान और शूरवीर थे । उनकी वीरता को जानकर दूर-दूर से राजा महाराजा उन्हें युद्ध में सहायता के लिए बुलवाते थे । एक समय बुरहानपुर के मराठा सूबेदार और जैनाबाद के आहीरों के बीच असीरगढ किले के लिए युद्ध हुआ, जिस में रामप्रतापजी को मराठो की ओर से बुलावा भेजा गया । रामप्रतापजी और घनश्यामजी में बहुत प्रेम था इस लिए रामप्रतापभाई बैल गाडी में घनश्यामजी को साथ लेकर बुरहानपुर के समीप छावनी में आये । घनश्यामजी को छावनी में सुरक्षित छोडकर भाई लडाई में गए।

सुबह से शाम तक भीषण युद्ध हुआ । लडाई के बीच में रामप्रताप भाई को बहुत प्यास लगने लगी । घनश्यामजी ने अंतर्यामी शक्ति से यह जान कर दिव्य स्वरुप धारण किया और पानी लेकर संग्राम में भाई के पास आए।

तब रामप्रतापभाई घनश्यामजी को देख कर बोले- घनश्याम, गोली लगेगी तो मर जायेगा, यहां मत आईयो।

तब घनश्यामजी बोले- बडे भाई को जब जब प्यास लगेगी, तब तब आवेगा।

छावनी युद्ध स्थल से पांच गांव दूर थी (तकरीबन १५ किलोमीटर) जब घनश्याम लडाई में भाई को पानी पीला रहे थे तभी दुसरे स्वरुप में छावनी में भी विराजमान थे । शाम को जब रामप्रताप भाई युद्ध में विजयी हुए तब घनश्याम महाराज को लेकर बुरहानपुर के राजघाट पर आये । वहां से तापी नदी पार कर के जैनाबाद पहुंचे । वहां से घनश्यामजी ने एक ढोलक और गोरस (दहीं) लिया । राजघाट के सामने उस समय नदी के पार दो इमली के पेड थे जहां रामप्रतापजी और घनश्यामजी ने साथ बैठकर भोजन किया, फिर तापी नदी में हाथ धो कर जल पी लिया।

इस प्रकार घनश्यामजी ने अपने प्राणों की परवाह किये बगैर अपने बडे भाई को पानी पिलाने के लिए लडाई के मैदान में आकर भातृ प्रेम की अनुपम शिक्षा दी है । इस लीला का श्रवण करने से भाईयों में क्लेश का नाश होगा और प्रेम बढेगा।

(अद्‌भूतानंद स्वामी की बातें - बात -२)

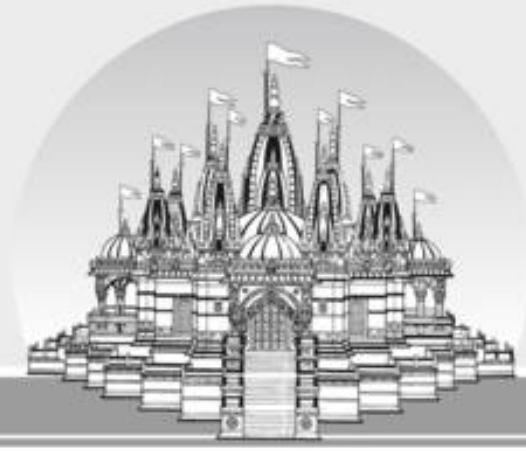

वड़तालधाम महिमा

-धर्मप्रकाश स्वामी (भूमेल-वडताल)

वड़तालधाम के दर्शन के लिए। लोकेशन (स्थान) की द्रष्टि से यहाँ आगमन हेतु गुजरात और भारत देश के सभी शहर के जनसमुदाय को सरल है। नेशनल हाईवे नं.८ होने से।

सभी शहर को जोड़ती शृंखला के समान रेलगाड़ी भी मील सकती है।

उसी तरह राजमार्ग (हाइ-वे) भी राज्य को राज्य से जोड़ती शृंखला है, अत: किसी भी शहर या किसी भी राज्य में से वड़तालधाम आगमन हेतु सुविधाएँ उपलब्ध है। यदि किसीको हवाई मार्ग से आनेकी ईच्छा हो तो अहमदाबाद हवाईअड्डा भी नीकट है एवम बड़ौदा हवाईअड्डा भी नीकट ही है। वड़ताल में ट्राफिक जाम का कोई सवाल ही नहीं है।

पूरे संप्रदाय में एक गोमती तीर्थ सरोवर सजीवन जल वड़तालधाम में है। किसी को वाहन या मार्ग के बारे में वड़तालधाम तट से सुदूरवर्ती क्षेत्र नहीं लगता है। कितने ही भक्त समुदाय दर्शन हेतु वड़तालधाम में पधारे तो भी जलप्रबंध की कोई समस्या होती नहीं है।

वड़तालधाम में सबसे श्रेष्ठ तथा अति अद्‌भूत प्रसादिभूत एक एक धूलकण श्रीजी के चरणकमल से पावन हुई है, प्रभु की श्रेष्ठ दिव्य लीलाभूमि सम्प्रति (वर्तमान) में भी सभी भक्तजनों को शांति की अनुभूति प्रदान होती है ऐसा दिव्य स्थल अर्थात् प्रसादिभूत ज्ञानबाग।

यहाँ प्रवेश करते ही द्वार के सन्मुख प्रसादीभूत ईमली का वृक्ष है एवम् जहाँ श्रीजी महाराज बिराजते थे वह ईमली वृक्ष का प्रसादी मंच भी है तथा श्रीजी महाराज रंगो से खेले थे वह प्रसादी के गंगा-यमुना के जल कुंड है। दिव्य छ धाम प्रदर्शनी, गोपालानंद तथा शुकानंद स्वामी का प्रसादी का कुआँ, दर्शन प्रदर्शनी, दरबारगढ और जिस झूले पर श्रीजी महाराज झूले थे वह दिव्य स्थल, भगवान की प्रत्यक्ष लीला की अनुभूति का प्रदर्शन, प्रसादी की चीजों का प्रदर्शन है। इस लीलाभूमि के विकास का यश मिलता है दर्शनीय पार्षदवर्य भक्तराज कानजी भगतजी को । सबसे श्रेष्ठ वड़तालधाम लक्ष्मीजी की तपोभूमि है। भृगुपुत्री लक्ष्मीजी ने अच्छे जीवनसाथी की प्राप्ती हेतु यहाँ जो मंदिर है वह दिव्यस्थान पर तपश्चर्या की है।

भगवान श्री विष्णु ने प्रसन्न होकर दर्शन दिए और वरदान माँगने को कहा तब लक्ष्मीजी ने कहां कि - हम दोनों का यहाँ दिव्य मंदिर बने। तब भगवान श्री नारायणने कहा -

तथास्तु और उस वरदान को सत्य करने हेतु भगवान श्री स्वामिनारायण ने मंदिर निर्माण कर हरिभक्तों के संकल्पों को पूर्ण करने हेतु लक्ष्मीजी और श्रीनारायण की मूर्ति प्रतिष्ठा कर के प्रस्थापित की। सूर्यनारायण जिस तरह पूर्व से पश्चिम और पश्चिम से पूर्व की ओर जाते है उसी तरह, भगवान श्री स्वामिनारायण गढ़पुर से वड़ताल और वड़ताल से गढपुर आते-जाते है।

सोते-बैठते सर्वकाल
श्रीजी स्मरण करते है वड़ताल।

अर्थात् प्रभु अन्य प्रांत में विचरण करते तथा वहाँ शयन कर रहे हो या बैठे हो अन्य कोई प्रवृति कार्य में लीन हो मगर वह बार-बार वड़ताल वड़ताल वड़ताल स्मरण करते हैं। इतना बहुत प्यारा वड़तालधाम श्रीजी के हृदयकमल में बस गया है। श्रीजी को वड़ताल प्यारा तो हमको भी क्यूं प्यारा न हो।

उपयुक्त इन सभी कारणों से प्रभु ने वड़तालधाम को पूरे संप्रदाय की राजधानी बनाया है। यह मेरा चिंतन सत्य साबित हो सकता है....

चंद्रमाँ की कला बढ़ती है और घटती भी है त्रिलोक पावनी गंगा नदी का जल भी बढ़ता ओर घटता है अन्य क्षेत्रो में भी वृद्धि एवम् घटौती द्रष्टिगोचर होती है किन्तु... किन्तु... स्वामिनाराण संप्रदाय के विकास कार्य बढ़ते ही जाते बढ़ते ही जाते है। स्वामिनारायण संप्रदाय प्रगति के पथ पर आगे बढ़ता ही जा रहा है। उसी तरह वड़तालधाम की महिमा भी बढ़ती ही जा रही है।

धार्मिक, सामाजिक, राजकिय, आरोग्य क्षेत्र सभी के हदय में वड़तालधाम विशेष और विशेष बसता जाता है आपको ज्ञात है कि ईन सबमें अजब शक्ति श्रीजी महाराज की काम कर रही है। प्रभु ने सभी आश्रित वर्ग को आदेश दिया की, आपको साल में दो बार समैया करने वड़ताल आना है। कुमकुम पत्रिका की प्रतिक्षा न करना। में आज मनुष्यरुप में उपस्थित हुँ तब अभी तथा भविष्य के भावि सभी आश्रितों को आज्ञा करता हूँ कि आपको वड़ताल में दो समैया करना है प्रथम कार्तिक माह के शुकलपक्ष की एकादशी के दिन तथा द्वितिय चैत्र माह के शुकलपक्ष की नवमी यानि मेरे प्रागटयदिन अवश्य आना तथा साल की बारह पूर्णिमा के दिन भी वड़ताल आना। एसी दो आज्ञा श्रीजी ने केवल वड़ताल के लिए ही की है क्यूँकी यहाँ शिक्षापत्री लेखन किया, यहाँ उपास्य स्वरुप स्थापित किया, यहाँ दो देश दो गादी का विभाजन किया, प्रतिवर्ष द्वारिका की यात्रा करने की आज्ञा के लिए (शिक्षापत्री) द्वारिका के देव की वड़ताल में प्रतिष्ठा की।

आफ्रिका के गाढ अरण्य प्रांत में भी कोई विकट परिस्थिति में फँस गया हो और उस समय कोई स्वामिनारायण का वड़ताल ईतना स्मरण करे तो प्रभु तुरन्त उसको सहायता कर मार्ग दिखाए... एसी महिमा है वड़तालधाम की।

धर्मप्रकाश स्वामी,
भूमेल गुरुकुल मूर्तिधाम
दिनांक : १७-५-२०१८

जय श्री स्वामिनारायण

'श्रीहरि की अनन्य शरणागति'

- शा. पूर्णवल्लभदास

भक्ति और प्रपत्ति (शरणागति) मोक्षमार्ग के सरल साधन है। व्रत, तप, दान, अनुष्ठान, आत्मज्ञान इत्यादि कठिन साधनो को सिद्ध करना कलियुग में तो और कठिन है। न ऐसा अपरिमीत बुद्धियोग है जिनसे सभी शास्त्री के मर्म को जाना जाये। कलियुग के प्रभाव से मनुष्य की आयु और बुद्धि भी अल्प होती है। न तो पूर्व का बलीष्ठ संस्कार है, और न तो धर्म में अचल निष्ठा है, जो दुष्प्रभावित इस युग में और कुसंग के योग में भी सुरक्षित रहे। देश, काल, क्रिया संग इत्यादिका सुमेल भी न होने से भवसागर को तैरने में अत्याधिक प्रतिकूलता रहती है। एसे विपरीत हालातो में मुमुक्षु को सत्संग के द्वारा भगवद् आश्रय का सुमेल हो जाये तो सभी प्रतिकूलताये अनुकूलता में तबदील हो जाती है। जैसे स्टेम्प (सिक्का) पे रहे अक्षर उलटे होते है, कागज पे पडते हि वह उलटे अक्षर सीधे होकर सब सुगम कर देता है।

भगवान की शरणागति मुमुक्षु के लिए बिच समुद्र में नौका के समान है। अर्थात् भगवद् आश्रय के बिना अन्य कोई उपाय ही नहीं है। परावाणी स्वरूप वचनामृत में भगवान श्री स्वामिनारायण कहते है, 'बहुत सिद्ध हुए है, बहुत सर्वज्ञ हुए है, बहुत देवता हुए है... ईत्यादि अनन्त भांति की बढाई (श्रेष्ठता) को प्राप्त करते है और परम पद (मोक्ष) को भी प्राप्त करते है, वे सभी भगवानकी उपासना के बल से प्राप्त करते है। क्योंकी उपासना बिना कोई साधन सिद्ध नहीं होते.' (ग.प्र. ५६)

यहां 'उपासना' शब्दका सरल एवं सारभूत अर्थ है 'स्वयं श्रीहरि' अर्थात् उपासना बिना माने भगवद् आश्रय के बिना कोई साधन सिद्ध नहीं होता, फलदायी नहीं होता। भगवद् आश्रय और उपासना दो नाम और एक वस्तु है। - सद्. मुक्तानन्द स्वामी कहते है, 'हरि बिन साधन कोटी से, भव पार न पावे...'

आश्रय और अनन्याश्रय

हम सब भगवान के भक्त है, अपितु हम जब पक्के एवं सच्चे भक्त बनेगें तब ही कुछ प्राप्त कर शकेंगे। ऐसे ही सत्संग में आकर वर्तमान धारण करके, कण्ठी पहन के हम सामान्य आश्रित बन गयें, सत्संग करते करते जब भगवान का अनन्य आश्रय (शरणागति) ले लेंगे तब हमारा श्रेय होगा।

एक भगवान के अलावा अन्य कोइ आश्रय-आधार-उपाय न रहे उसे अनन्याश्रय कहते है। उपाय और उपेय दोनों श्रीहरि हो जाये वह अनन्याश्रय है।

वचनामृत में श्रीजी महाराज कहते है, 'एक ही साधन से भगवान प्रसन्न हो वह बताते है, भगवान का जो द्रढ आश्रय है वही ही सभी साधनो में बडा साधन है। जीससे भगवान प्रसन्न होते है। और वह आश्रय अत्यंत द्रढ होना चाहिए ,उसमें किसी भी प्रकार की पोल (न्युनता) न रहे।' (ग.प्र.३३)

यहां पर पोल माने भगवान के बिना अन्य कोई उपाय का अवलम्बन न रहें। गीता में भगवान कहते है, 'तमेव शरणं गच्छ सर्वभावेन भारत' (१८-६२) हे अर्जुन, वह प्रभु के शरण में सर्वभाव सें तुम जाओ। हम नित्य प्रार्थना में कहते है,

त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव ।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्वं मम देव देव ॥

हे प्रभु, 'त्वम् एव' एक मात्र तुम ही मेरे मात-पिता,बन्धु, सखा विद्या, धन हो, तुम ही मेरा सर्वस्व हो।

सर्वाधार प्रभु ही एकमात्र हमारे आधार है। मोक्ष पथमें अन्याश्रय को बडा दोष माना गया है। लोक में मदीरा, मांस, व्यभिचार, हिंसा को दोष-पाप कहते है, वैसी ही भगवद् भक्त के लिए भगवान को छोडकर अन्याश्रय बडा दोष है।

नीलकण्ठ वर्णी के स्वरूप में श्रीहरि जब सद्. मुक्तानन्द स्वामी को मीले तब सद्. रामानन्द स्वामी को पत्र लिखते वक्त श्रीहरि ने अपने हाथ से लिखा,

मारे मात तात बन्धु लैये, सुहृद् स्वामी गुरु कृष्ण कैये ।

(भ.चि.४२-२०)

मेरे तो मात, तात, बन्धु, मित्र, गुरु सभी भगवान है ।

ऐसे अनन्य आश्रय से प्रभु प्रसन्न होते है। अन्य आधार-अवलम्बन तोड के, निराधार हो कर एक मात्र श्रीहरि का आधार-आश्रय स्वीकारना चाहिए।

महाभारत में द्रौपदीजी की कथा हमारे लिए प्रेरणादायी है। पांडव जुआं मे पत्नि द्रौपदी को हार गए। उस समय दुर्योधन बहुत मदोन्मत्त था। राजसभा में किसी की भी परवाह किए बिना आदेश दिया, द्रौपदी को सभा में बुलाया जाये और उसका वस्त्र हरण करके मेरी गोद में बेठाउंगा। दु:शासन ने जघन्य काम किया, उस समय द्रौपदी चिखती थी, उनके अपराजेय पांच पतिओं को नाम लेकर अपनी रक्षा की भीख मांगती थी, पितामह भीष्म, द्रोणाचार्य, कृपाचार्य, स्वयं धर्मराज युधिष्ठिर सभी पराधिन विवश थे। उस सभा में कोई सामान्य नहीं थे, सभी अत्यधिक सामर्थ्यवान थे, वरीष्ठ थे, फीर भी कौई द्रौपदी की रक्षा नहीं कर पाए। आश्चर्य तो इस बात का है की, द्रौपदीजी श्री कृष्ण की परम भक्त थी, किन्तु भगवान श्री कृष्ण भी उनकी रक्षा के लिए नहीं आये। द्रौपदीजी को जब यह स्मरण हुआ की एक श्री कृष्ण के सिवा मेरा कोई नहि है, एसे अनन्य आश्रय भाव से भगवान को पुकार किया, 'हे कृष्ण द्वारिकावासिन्' अन्य सभी आश्रयबल तुट गया, अपना भी बल नहीं रहा, तब एक भगवान का विशुद्ध आश्रयबल रहा, उसी वक्त प्रभु प्रगट हुए और द्रौपदीजी की रक्षा की।'

ऐसी अनन्य शरणागति भवजल तरने में सहायभूत होती है। अन्याश्रय की गंध से श्रीहरि बहुत दूर रहते है। गीता में भगवान कहते है, 'माम् एकं शरणं व्रज' एकमात्र मेरे शरण तुम आओ, 'अहं त्वां सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः' मै तुम्हे सभी कर्मो से मुक्त करके सुखी करुंगा, तुम तनीक भी शोक-चिन्ता मत करो. यदि माना जाए तो यह प्रभुका वरदान है। सद्. प्रेमानन्द स्वामी कहते है, 'जां को कोइ नहीं या जग में, तां के हो तुम महाराज।' अन्याश्रय तुटते हि श्रीहरि आश्रयभूत बन जाते है, क्योंकी वह 'शरणागत वत्सल' है। शरणागत की सदैव श्रीहरि रक्षा करते है।

अनन्य शरणागतिका स्वरूप क्या है? हम कैसे जान सके कि हम भी प्रभु के अनन्य शरणागत है? इस सम्प्रदाय में श्रीजी महाराज के समकालीन नन्दपक्ति के संतो के साहित्य में यह बहुत स्पष्ट दिखाई देता है। वे सभी महासमर्थ थे, बड़े ऐश्वर्यवान भी थे। सकल साधन सम्पन्न थे। सभी विद्याओं के ज्ञाता थे। चमत्कार तो उनका दास था। फीर भी वे भगवान स्वामिनारायण के अनन्य शरणागत रहे है। सद. मुक्तानन्द स्वामी कहते है,

'नाव के काग की गति भइ मेरी, जहां देखु तहां जलनिधि खारा.. मेरे तो तुम एक आधारा..'

जैसे कोइ बडा जहाज समुद्रयात्रा में चल पडा हो और कुछ कँवें जहाज में बैठे हो, मध्य समुद्र में नाविक को पता चले जहांज पे कौंवे आ गये है, तो नाविक उसे उडाते है, भगाते है, फीर भी कँवे जहाज पे ही आके बैठता है। क्योंकी जहाज के बिना उनकी कोई गति ही नहि है। यह है शरणागति का स्वरूप, श्रीहरि के बिना हमारी कोई गति न रहे तब अन्तरके आर्तनाद से प्रार्थना होती है।

आज हमारा बहोत बडा भाग्य है, कि हमे सर्वावतारी भगवान श्री स्वामिनारायण महाप्रभु की उपासना मीली है। उनकी शरणागती पा कर हमें हमारा जीवन सुखी करना चाहिए। अंत में सद्. निष्कुलानन्द स्वामी ने की हुई प्रार्थना हमारे लिए बहुत सहायभूत है।

केनेक बल अन्न धन राज्यतणुं जी,
केनेक बल वळी विद्यानुं घणुंजी ।
केनेक बल देह देखी आपणुं जी,
एह माहेलु बल नथी मारे अणुंजी ।
अणु नथी एह माहेलु, वळी बल बीजानुं मांहरे ।
समर्थ सहजानंदजी, हुं तो शरण छव तांहरे ॥

अन्न, धन, राज्य, विद्या, यौवन, अपने सत्कार्य, बडों की पहचान ईत्यादी किसी भी प्रकार का मुजे बल (विश्वास-आधार) नहीं हे, है समर्थ सहजानंदजी, मैं तो तेरे शरणबल से बलवान हूं।

वडताल मंदिर
श्री स्वामिनारायण संप्रदायकी राजधानी वडतालधाम स्थित
श्री स्वामिनारायण मंदिर : निर्माण गाथा

लेखक : हरेन्द्र प्र. भट्ट अनुवादक : डो. हमीर मकवाणा

अनंतकोटि ब्रह्मांड के अधिपति श्री स्वामिनारायण महाप्रभुजी ने इस ब्रह्मांड में अवतरित होकर अनंत जीवात्माओं के कल्याण हेतु एवम् सर्व जीवों के हित के लिए तीन संकल्प किए थे। उनमें से एक वह स्वयं पृथ्वी पर से अंतर्ध्यान हो तब भक्तजनों के ध्यान, उपासना आदि के लिए महामंदिर निर्माण करने का संकल्प था । अत: अहमदाबाद में विक्रम संवत १८७८ के फाल्गुन माह, में भगवान श्री स्वामिनारायण ने श्री नरनारायणदेव की मूर्ति प्रतिष्ठा कर एक ही दिन में अहमदाबाद और आसपास के कि चोर्यासी कर विप्रों को भोजन करवाया और दक्षिणा भी दी। तत् पश्चात गढडा में आए वहाँ से श्री हरि नवमी का उत्सव करने के लिए प्रभु वड़ताल धाम पधारे। उत्सव पूर्ण होने के बाद दूसरे दिन सभा हुई तब गाँव के मुखिया हरिभक्त बापुभाई, गोरधन माली आदि हरिभक्तों ने वड़ताल में दिव्य मंदिर निर्माण का श्रीजी महाराज ने दिए वचन का मंगल स्मरण करवाया। हरिभक्तों की बात सुनकर श्रीजी महाराज अति प्रसन्न हुए। श्रीजी महाराज को प्रसन्न होते हुए देखकर बापुभाई और जोबनपगी ने दोनों हाथ जोड़कर बिनती करते हुए कहा-महाराज ! एक बात आपको पहले कहनी थी किन्तु रह गई। आपकी आज्ञा हो तो बताये।

कहो, खुशी से कहो। ऐसा कहकर श्रीजी महाराज हास्य करते मधुर वचन से बोले, मंदिर निर्माणकार्य हेतु इँट बनवाई है यही बात कहना चाहते हो ना। अंतर्यामी सर्वेश्वर श्रीहरिने कहा।

बापुभाई और जोबनपगी दोनोंने हाथ जोड़कर वंदन कर कहा, हे प्रभु ! आप तो सर्वज्ञ अंतर्यामी हो। आपने हदय में रहकर प्रेरणा दी, इसलिए इँटे बनवाई है। छ माह बित गये किन्तु यह बात आपको कहने कि रह गई हमारी यह गलती माफ करना, किन्तु आज आपने प्रसन्न मुखारविंद से मंदिर निर्माणकार्य के लिए हा कहा ईसलीऐ यह बात आपको बताई।

श्रीजी महाराज ने यह सुनकर कहा कि आपके ईस कार्य से में प्रसन्न हूं। आपकी सेवा भावना से ही मेंने यहाँ अपना प्रिय दिव्य मंदिर बनाने का निर्णय किया है। अत: अभी केरीयावी के जोषी गोविंदराम को बुलावो। गोविंदराम जोषी आऐ उनके पास श्रीजी महाराज ने मंदिर निर्माण हेतु शिलान्यास का शुभमूहुर्त निकलवाया । मूहुर्त चैत्र माह की शुक्ल त्रयोदशा के दिन का आया, अत: मनुष्य नाट्य कर रहे भगवान स्वामिनारायण ने बडे संत हरिभक्त को बुलाकर मंदिर का निर्माण किस स्थान पर किया जाए यह सबकी राय पूछी।

भगवान श्री स्वामिनारायण जब विक्रम सन १८५५ के फाल्गुन माह के शुक्लपक्ष की द्वादश तिथि के दिन वड़ताल में निलकंठ वर्णि स्वरुप में पहले पधारे थे तब जोबनपगी को ईस बदरीवृक्ष के नीचे मंदिर होगा ऐसा निर्देश किया था । कुछ सालों बाद गाँव के हरिभक्तों जब लालन-पालन हेतु जब बदरीवृक्ष के पास में एक खंड बनाकर उसमें श्री नारायणदेव की मूर्ति स्थापित की थी तब ईसी स्थान पर भव्य मंदिर होगा ऐसा निर्देश किया था। वहाँ ही भूमिपूजन करना तथा मंदिर भी उसी दिव्य स्थल पर बनाना ऐसा सभा में सबने निर्णय किया। उमरेठ से दो

वेदपाठी विप्र घेलाभाई और हरिभाई को तत्काल बुलावा भेजा। मंदिर निर्माण कार्य में निपुण एवम कुशल शिल्पीओं अहमदाबाद से कुबेरजी तथा हीराजी, बडोदा से पुरुषोत्तम दामोदर और भगुजी, नडियाद से केवलदास शिल्पकारों को बुलवाया गया।

अब चैत्र माह के शुक्लपक्ष की त्रयोदशी के पवित्र एवम् शुभ दिन जिसने अपने हस्तकमल से पुरे विश्व की नींव डाली है ऐसे विश्वेश्वर भगवान श्री स्वामिनारायण ने वड़ताल में भव्य मंदिर बनाने हेतु वेदोक्त मंत्रोच्चार के साथे शिलान्यास की पांच इँटो से नींव रखी। ईस महामंगल पवित्र दिन मुक्तानंद स्वामी, गोपालानंद स्वामी, नित्यानंद स्वामी, ब्रह्मानंद स्वामी आदि बड़े संत-महात्मा वड़ताल गाँव के मुखिया बापुभाई अन्य पाटीदार भक्तजन, जोबनपगी, डाह्याभाई महेता, बोचासण के काशीदास, उमरेठ के रुपराम ठाकर, नरभेराम, दयाराम शुक्ल, नडीयाद के गंगाराम शुक्ल, डभाण के रुघनाथदास काशीदास, वसो के तुलसीभाई अमीन, दवेदादा, विप्रवाला ध्रुव, सोजीत्रा के गोकुलभाई, पेटलाद के व्रजलाल, सींजीवाडा के जगरुप बारोट, बामरोली के तखापगी, बुधेज के खोडाभाई, हठिभाई आदि हरिभक्त एक ही द्रष्टि से भूमि पूजन की शुभ पूजा देख रहे थे। भगवान श्री स्वामिनारायण ने वेदमंत्रो के मंगलमय उच्चारण ध्वनि के साथ चुना बिछाकर उसके उपर नींव रुपी पांच इँट रखकर पूजन किया तथा जलाभिषेक भी किया फिर थोडी देर तक उस इँटो पर अपना दक्षिणी हस्त रखकर भुवन मनोहर कृपाद्रष्टि से देखा। मिट्टी और कोयले और पानी से बनी इँटे के बदले अलौकिक तेज का महाराशि घन स्वरुप स्थापित हुआ। सभी ने अष्टसिध्धि और नवनिधि से बनी नींव का साक्षात्कार किया। गोरधन माली और डाह्याभाई मेहता को मन में कुछ विचार किया। उन्हों ने धीरे से इँटो पर हाथ रखा तो इँटे पाताल पृथ्वी के साथ वज्र जैसी जुडी हुई लगी। उन्हों ने आश्चर्य आनंद द्रष्टि से नंदपुरुषो की ओर देखा पास में खडे सुराखाचर और सोमला खाचर ने ईन चार द्विजों की द्रष्टि संकेत देखा। वह धीरे से शीलान्यासवाले गड्ढे में उतरे और ईंटो पर हाथ रखा तो इँटे जैसे लाख वजन की बनी हो उतनी भारी लगी। उनकी खुशी का पार न रहा। धन्य प्रभु, धन्य प्रभु। ऐसा कहते कहते बहार आए, फिर गड्ढा मिट्टी और पानी से भर दिया गया। जिसनें सृष्टि की रचना की है और आज भी करते है वह जगकर्ता जगदिश्वर अपने हस्तकमल से नींव रखे उसमें पूरे विश्व को धारण करने की शक्ति आए उसमें क्या आश्चर्य ? सबने अलौकिक आनंद की अनुभूति की और फिर भोजन प्रसाद ग्रहण कर करवाकर कृतार्थ हुए।

इस तरह भूमिपूजन की सारी शारदापूजा पूर्ण होने के बाद श्रीहरि ने उनके आश्रितों की सभा भर उसमें स्वमुख से मंदिर की पूर्वयोजना समजाई और शिल्पकारों को नडीयाद स्थित नारायणदेव के मंदिर की आकृति को नमूने के तौर पर स्वीकारकर मंदिर निर्माण की सलाह दी। मनुष्य नाटय कर रहे भगवान श्री स्वामिनारायण तुरंत शिल्पकारों को साथ लेकर श्री नारायणदेव के दर्शन करने और मंदिर की आकृति देखने नडीयाद आए और बहुत सारे सवाल पूछे, किन्तु शिल्पकार उसका सही उत्तर न दे सके। श्रीजी महाराजने कहा, आप सब शिल्पशास्त्र में निपूण हो किन्तु, हमें कोई और शिल्पकृति की नकल नहीं करनी है। वड़ताल में सबसे श्रेष्ठ और सबसे सुंदर एसा दिव्य मंदिर बनाना है यह बात ध्यान में रहे। आप मंदिर का एक चित्र तैयार कीजिए। हम तीन बडे शिखर ओर छ छोटे शिखरवाला विशाल मंदिर बनाना चाहते है। ऐसे मंदिर की रुपरेखावाला चित्र आप बनाओं।

ईस तरह श्रीहरि की आज्ञा होंते ही केवल चार घंटो में मंदिर का चित्र तैयार किया। अहमदाबाद के हीराजी मारवाडी ने बनाया चित्र श्रीजी महाराज को पसंद आया किन्तु, उसमें बडोदा के पुरुषोत्तम ओर भगुजी ने अपने चित्र

में दिखाया उस तरह थोडा सुधार करने का सूचन किया और उस सुधार के साथ ही जो चित्र (प्लान) आखिरकार पूर्ण हुआ इसे श्रीजी महाराज ने स्वयम् पसंद किया।

वड़ताल मंदिर, निर्माण कार्य के लिए तीन शिल्पकार हीराजी, पुरुषोत्तम और भगुजी को नियुक्त किया। दुसरी एक योजना अधुरी थी, वह मंदिर में प्रतिष्ठा करने हेतु अर्चा स्वरुपों की। तो श्रीजी महाराज ने कहा निजमंदिर में मध्य शिखर के नीचे श्री लक्ष्मीनारायण देव और पास के उत्तर शिखर के नीचे श्री धर्मदेव, श्री भक्तिदेवी और वासुदेव नारायण की मूर्तिया तथा दक्षिण शिखर के नीचे राधिकाजी सहित श्रीकृष्ण तथा हरिकृष्ण नाम से अपनी स्वयम मूर्ति की स्थापना करने की ईच्छा प्रकट की। निज मंदिर के बाहर की ओर मंदिर के गुम्बज खंड में श्री मत्स्य, श्री कूर्म, श्री वराह, श्री नृसिंह, श्री शेषनारायण के स्वरुप तथा गणेशजी, हनुमानजी की स्थापना करने की इच्छा प्रकट की, सबको बहुत खुशी हुई।

अर्चा स्वरुपो को तैयार करने का काम श्रीजी महाराज ने नारायणजीभाई कों सोंपा तथा उनकी मदद में शिल्पकार हिराजी ओर भगुजी की नियुक्ति की तथा बडे संत महंतो से गोष्टि करने के पश्चात मंदिर निर्माण का महाकार्य संभालने की जिम्मेवारी का कार्य अक्षरानंद ब्रह्मचारी और ब्रह्मानंद स्वामी तथा अखंडानंद ब्रह्मचारी को उनकी सहायता करने के लिए नियुकत्त किया गया।

अनंतकोटि ब्रह्मांडनायक, अनविधकातिशय ज्ञान बल, वीर्य, शक्ति, तेज और ऐश्वर्यवाले, सर्वत्र, स्वतंत्र ऐसे महाप्रभु भगवान श्री स्वामिनारायण सेवारुपी भक्ति और मुक्ति के महा आदर्श को जीवन में साकार करने के लिए अद्भूत योजना का आरंभ किया।

वड़ताल गाँव में सभी ज्ञाति के हरिभक्त निवास करते थे। उन सभी को श्रीजी महाराज ने अपने पास बुलाया। पाटीदारों में बापुभाई, वालाभाई, रणछोडभाई, भाईजीभाई, नरोत्तमदास, नरसीदास, लालदास, जोराभाई, जीवाभाई, दलाभाई, धोरीभाई, शामळदास, धर्मदास, वसनदास, कहानदास, बेचरभाई, दाजीभाई, सवजीभाई, कानजीभाई, मुळजीभाई, शवदास, इश्वरभाई, दयालभाई आदि वैश्य में साकरलाल, मोतीचंद, माणेकचंद, नथुभाई, रामजीभाई, जेठालाल, गिरिधरलाल आदि तथा पगीओंमें जोबनपगी, सुंदरजी, दलाजी, शकराजी, झालोजी, वख्तोजी, गणेशजी, देवकरण जकतोजी, उज्मजी आदि । सुथार में वासण, नारायण, भगवान, जाखजी आदि कंसारों में अंबाईदास, मूलजी, नारायणदास आदि गोंसाई में नारायणगिरि, पुरुषोत्तमगिरि, रुगनाथजी, रामचंद्रगिरि, रुपगिरि आदि गोरधनमाली डाह्याभाई मेहता आदि गाँव की सभी ज्ञाति के हरिभक्त श्रीजी महाराज के पास हाथ जोड़कर खड़े रहे। श्री हरि ने उन्हें कहा,

जो कोई इस मंदिर के काम वह आप सब करना तमाम...।

तब सब हरिभक्तो ने कहा, सब के शिरनामी पाघ, अहो हमारें अति धनभाग्य, देवलयार्थे सब कुछ देना, कहाँ से मिले उत्तम काम ऐसा।

ईस तरह जहाँ सब हरिभक्तों ने मंदिर निर्माण का कार्य, मानो अपने ही घर का काम हो उस तरह मानकर शिरसावंद्य कहा तब श्रीजी महाराज अति प्रसन्न हुए। गाँव के हरिभक्त तथा दूसरे गाँव के भी हरिभक्तों को श्रीजी महाराज ने अपने पास बुलाया जिस में थे नडीयाद के गंगाराम और मोहनराम, महुधा से अंबुभाई अमीन, उमरेठ से रुपराम ठाकर, नरभेराम दवे, दयाराम शुक्ल, वसो से तुलसीभाई दादाभाई दवे, वाला ध्रुव, सोजीत्रा से गोकुलभाई, पेटलाद से व्रजलाल सींजीवाडा से जगरुप बारोट, बुधेज से खोडाभाई और हठीभाई, डभाण से रुघनाथदास, बोचासण से काशीदास आदि को एक माह के लिए वड़ताल में रुकवा के मंदिर निर्माण का कार्यभार सोंपा गया। उसी तरह

आसपास के दूसरे गाँव के जैसे कि बामरोली, महुडियापरा, जीडवुं परा, नरसंडा, जोळ, कणजरी, वलासण, खांधली, चांगा, संजाया, महेळाव, गाना आदि गांवो के हरिभक्तो को बुलवाकर निर्माण का माल-सामान आदि लाने के लिए बैलगाडी आदि द्वारा सहयोग देने का कहा गया। वड़ताल में मंदिर निर्माण का कार्य आयोजन के लिए श्रीजी महाराज देढ माह वड़ताल में रहे तथा स्व देखरेख के तहत मंदिर निर्माण का श्रीगणेश किया।

पूर्व मंचकी ओर ईंटे बनवाने का कार्य शुरू किया गया। श्रीजी महाराज स्वयम् ईंटे लेने के लिए अठारह बार यहाँ आये थे ओर छ-त्तीस ईंटे अपने मस्तिष्क पर उठाकर मंदिर निर्माण कार्य हेतु वहाँ लाये थे। संतो और हरिभक्तो तथा अनेक स्त्री हरिभक्तों ने भी ईंटे अपने शिर पर उठाकर मंदिर निर्माण कार्य स्थल पर इँटो का ढेर लगा दिया था। श्रीजी महाराजने स्वयम् दो बार चूने का पात्र उठाकर कडीयों (राजगीरो) को दिया था। भगवान और भक्तजनों के सामुहिक सेवा श्रम यज्ञ के प्रतिक समान ईस दिव्य मंदिर का निर्माण कार्य इस तरह से प्रारंभ कर करवाकर श्रीजी महाराज गढ़डा आये। (श्रीजी महाराज जो ईंटे लाते थे वह बडी ईंटे थी।)

संवत १९७९ की सालमें श्रीजी महाराजने ब्रह्मानंद स्वामी को वड़ताल में एक हनुमानजी के मंदिर जैसा छोटा मंदिर बनाने की आज्ञाकर बारह रुपये दिए। परंतु स्वामी ने वहाँ तो विशाल जमीन संपादन कर एक भव्य विशाल मंदिर निर्माण का आरंभ किया एसी खबर होते ही प्रभु श्रीहरि ने आनंदानंद स्वामी को तुरंत वड़ताल के लिए रवाना किया किन्तु स्वामी ने कार्य जारी रखते एक सुविख्यात संदेश की आप-ले हुई। श्री हरिने लिखा की,

अपनी पहोंच विचार के करीए तेती दोड़
तेता पाउ पसारीये जे ती लंबी सोड.

यह पत्र लेकर नित्यानंद स्वामी को भेजा था। प्रसरता सत्संग, चरोतर जैसे प्रदेश का मध्य स्थान उसकी भविष्य की द्रष्टि से ब्रह्मानंद स्वामी ने यह कार्य किया था। अभी हम देखते है कि मंदिर छोटा पडता है। ब्रह्मानंद स्वामी की एसी दीर्घद्रष्टि देखकर नित्यानंद स्वामी ने तीन शिखर का मंदिर बनाने का अनुरोध किया।

ब्रह्मानंद स्वामी ने श्रीजी महाराज को लिखा की,

साहिब सरीखा शेठीया बसे नगर के माही
ताके धन की क्या कमी,
जाकी हुंडी चले नवखंड मांही.

महाराज अति प्रसन्न हुए ओर नव्य-भव्य अति विशाल, अति सुंदर, रमणीय, मनोहर, दिव्य मंदिर, वड़तालधाम में बना।

श्री लक्ष्मीनारायण देव की युगलमूर्ति

गढ़डा से श्रीहरि थोडे समय बाद वड़ताल में आए तब मंदिर की निर्माण का कार्य पूर्ण हुआ था। इतनी जल्दी कार्य करने के लिए सभी भक्तों कार्यकर्ताओं को श्रीहरि ने प्रसन्नता से गले लगाया। अक्षरानंद स्वामी ने जब कहा कि मंदिर की नींव में नौ लाख ईँटो का उपयोग हुआ है। तब श्रीजी महाराज बहुत ही प्रसन्न हुए उन्हों ने अपने कण्ठ में से पुष्प का हार निकालकार अक्षरानंद स्वामी को पहेनाया और आशीर्वाद दिया ।

उस दिन श्रीजी महाराज नारायणजीभाई और भगुजी मूर्तियों को घाट (आकार) देने का काम कर रहे थे, वहाँ उनके साथ अक्षरानंद स्वामी, सुराखाचर, सोमल खाचर आदि सेवक भी साथ आए तैयार हुई मूर्तियो को देख रहे थे। (क्रमशः)

जीवन का ध्येय

ले. पार्षद श्री लालजी भगत (ज्ञानबाग-वडताल)

मनुष्य जब जन्म धारण करता है तब वह एक शक्ति के संचय के साथ, भगवान के अंशरूप प्रगट होता है। मगर ज्यादातर लोग जब देहत्याग करते है तब वो निस्तेज, निर्जल, क्षीण होते है और बंदूक की फुटी हुई कारतुस की तरह मृत्यु की ओर गति करते हैं।

इसका महद् कारण यह है कि जन्म के बाद बालक जब जब बडा होने लगता है तब तब पांच ज्ञानेन्द्रियों के संपर्क में आते है और उनके माध्यम से शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गंध आदि पंच विषय का संपर्क होता है और परिणाम स्वरूप वो पंचविषय उसके अंत:करण में प्रविष्ट होने लगते है। ईस जगतके पंच विषयों का सदा चिंतवन होने के कारण उसकी उर्जा बाहर जगत में गति करने लगती है।

मनुष्य के जीवनका अपना अधिकांश हिस्सा बहिर्मुखता के आधिन रहकर बाहरी जगतमें से सुख खोजनेमें ही व्यतीत हो जाता है। किसीको धन पाना है, किसीको यश पाना है, किसीको प्रेम संपादन करना है – ईत्यादि सुखके प्रसाधन को प्राप्त करने की तमाम प्रक्रिया मनुष्य बहिर्मुखता के आधिन रहकर ही करता है। अरे, किसीको मोक्ष प्राप्त करना है तो इसके लिए भी वह सदा बाहर के जगत में ही गतिशिल, प्रयत्नशील रहता है।

जब अपने शरीरकी उर्जा बाहर की ओर बहती है तो वह कामना में रुपांतरीत होती है और वह वासना की ओर ले जाती है। मगर जो उर्जा बाहरी तरफ बहती है, वह ध्यान-चिंतन के माध्यम से भीतर की ओर बहना शुरु हो जाय तो भगवान के स्वरुप में निष्काम भक्ति और उपासना का उदय होता है।

मनुष्य जब सुख की शोध भीतर की ओर शुरु करने लगे तब ही उसे सत्य ज्ञान का प्रबोधन होता है। भगवान स्वामिनारायण उनके वचनामृत में कहते है, 'यह जीव माया के आधिन होकर परवश होकर अंतर्दृष्टि करके स्वप्न-सुषुप्ति अवस्था में चला जाता है, मगर ज्ञान से अपने वास्तवीक स्वरूप का साक्षात्कार करने के लिए कभी अंत:द्रष्टि नहीं करता है।'

जो कोइ भगवान के प्रताप को समज के अंतर्दृष्टि करता है वह अपने स्वरूप को अतिशय उज्जवल, प्रकाशमान महसुस करता है और उस दिव्य प्रकाश के मध्य में उसे प्रत्यक्ष पुरुषोत्तम भगवान का दर्शन होता है। (वचनामृत ग.प्र.-२०)

यहां, अज्ञानवश होकर मनुष्य अंतर्मुख बनता ही है। सवाल सिर्फ ज्ञानावस्था में रहकर अंतर्मुख बनने का है। मनुष्य जितना अंतर आत्मा की गहराई में जाता है उतना ही उच्च चैतन्य की भूमिका में विहार कर शकता है। सवाल सिर्फ अपने आंतरमन में डूबकी लगाने का है।

अध्यात्मकी साधना जो हे उसका आयाम हंमेशा नीचे की ओर गति करता है। मगर उसके परिणाम स्वरूप प्रगट होनेवाली सिद्धियां हमे उपरकी ओर ले जाती है। गगनकी ओर गति करनेवालें वृक्ष पर जो फूल खिलते हैं उनका आधार पाताल की ओर गति करनेवाले उनके मूल होते है।

ध्यान मनुष्यको अंतर की गहराईयों में ले जाता है। जीसके फलस्वरूप साधक को भगवानकी मूर्तिका दिव्य आनंद प्राप्त होता है। मनुष्य जीवन की साधना का यही एक मात्र ध्येय होना चाहिये।

सत्संग समाचार

संकलन : साधु श्यामवल्लभदास (वडताल)

गुजरात पवित्र यात्राधाम बोर्ड के सहयोग से **वडतालधाम** में दिव्यांगे व वरिष्ठ नागरिकों की सेवा में उपलब्ध ई-रिक्षा और स्वच्छता हेतु ट्रेकटरका लोकापर्ण करते हुए पू.संत स्वामी, पू.मुनी स्वामी, पू.श्याम स्वामी - दिनांक. ५-४-१८

वडतालधाम में २२ वीं रविसभा के अवसर पर उपस्थितपू. संतगण, यजमानश्री विजयभाइ पटेल (मुनन्नाभाइ, कणजरी) एवं भक्तजन और नोटबुक वितरण-दिनांक ८-४-१८

लंदन (युके) में वडताल संस्थान अंतर्गत मंदिर निर्माण हेतु आयोजित सत्संग सभा में उपस्थित प.पू.शुकदेव स्वामी, पू. प्रभुचरण स्वामी एव भक्तजन -दिनांक. २०-४-१८

आफ्रिका में वडताल संस्थान अंतर्गत मंदिर निर्माण हेतु आयोजित सत्संग यात्र में प.पू. देवप्रकाशदासजी स्वामी (चेरमेनश्री), पू. आ.को.श्री संतस्वामी, पू. शुकदेवस्वामी, पू. हरिकेशवस्वामी एवं वडताल और चरोतर के भकतजन-दिनांक. २४-४-१८ से ३-५-१८)

वडतालधाम में पू. नारायणचरणदासजी (बुधेज) के मार्गदर्शन में आयोजित बालयुवा शिबिर के अवसर पर उपस्थित प.पू.आचार्य महाराजश्री, पू. संतगण, बालगण एवं युवा - दिनांक. १ से ३-५-१८

जल अभियान के लिए गुजरात के मुख्यमंत्रीश्री का वडताल संस्थान की ओरसे अभिवादन करते संतगण और **वडताल** में जल अभियान का कार्य् निरीक्षण करते धारासभ्यश्री पंकजभाई देसाई और संतगण. । दिनांक १-५-२०१८

वडतालधाम में आयोजीत अधिक मास कथा में उपस्थित
प.पू.ध.धू. १००८ आचार्यश्री राकेशप्रसादजी महाराजश्री, वक्ता पू.निलकंठचरणदासजी स्वामी और
पू.विवकसागर स्वामी एवं यजमान श्री घनश्यामभाई पटेल - महेसाणा तथा संत-भक्त. दिनांक २५ से ३१ मई, २०१८

वडतालधाम में जनमंगल महायज्ञ प्रारंभ में उपस्थित प.पू.महाराजश्री एवं संत-भक्त. दिनांक १६ मई से १३ जून, २०१८
अधिक मास जनमंगल महायज्ञकी पूर्णाहुती एवं अवभृथ स्नान. दिनांक १३ जून, २०१८

वडतालधाम में अधिक मास हरिजयंति अभिषेक के अवसर पर उपस्थित प.पू. आचार्य महाराजश्री, पू. संतगण एवं श्री महेशभाइ
(जनमंगल जवेलर्स, आणंद) आदि यजमान परिवार। दिनांक. २३-५-२०१८

वडतालधाम की २४ वी रवि सभा और आम्र उत्सव के यजमान तारापुर के गोविंदभाई ठक्कर और उत्तरसंडा के किरणभाई पटेल एवं संत-भक्त. दिनांक ३/४/२०१८

वडताल मंदिर स्थित पू.संत स्वामी, पू.श्याम स्वामी एवं स्वयंसेवको ने आम्रोत्सव के प्रासादिक २००० कीलो आम को विविध सेवाभावी संस्थानो में बांट के प्रशंसनीय कामगीरी की, हिन्दु अनाथ आश्रम (नडियाद), जलाराम वृद्धाश्रम (पीज), वृध्धाश्रम करमसद, अनाथ आश्रम (लांभवेल) और ट्राफिक पुलीस, नडियाद के जवानों में वितरीत किए। दिनांक. ४-६-२०१८

वडतालधाम में अधिक मास श्री रणछोडजी पाटोत्सव अभिषेक और सत्संग सभा आदि अवसर पर उपस्थित पू. लालजी महाराजश्री, चेरमेन पू. देवस्वामी, आदि संतगण एवं श्री घनश्यामभाइ शाह (इन्दौर स्थित) आदि यजमान परिवार ओर भक्तजन। दिनांक. ६-६-१८

धरगांव (मध्यप्रदेश) स्थित पू. देवप्रकाशस्वामी (कुक्षी स्थित) के मार्गदर्शनमें वडताल संस्थान के नूतन मंदिर के कार्यका शुभआरंभ दिनांक. १०-६-१८

नारायण संस्कृत विद्यालय, पेटलाद के पवित्र ब्राह्मण छात्रो को फुल स्केप नोटबुक्स बांटते पू.संत स्वामी, पू.पूर्णवल्लभ स्वामी और श्री महेन्द्रभाई पटेल - वडताल। दिनांक. १४-६-२०१८

वडताल मंदिर नोट बुक वितरण और स्टाफ मीटींग में उपस्थित पू.गोविंद स्वामी एवं संतगण. दिनांक १५ जून २०१८

वडताल स्थित मंदिर के सहयोग से नूतन निर्माणधीन बस अड्डेका द्रश्य. दिनांक १६ जून २०१८

वडताल स्थित पाठशाळा के पवित्र ब्राह्मण छात्रो को नोट बुक वितरण करते पू.प्रभुतानंदजी और घनश्याम भगत. दिनांक २७ जून, २०१८

वडताल में २५ वी रवि सभा और पू.नौतम स्वामी के जन्मदिन पर उपस्थित गुजरात विधानसभा सदस्य श्री पंकजभाई देसाई एवं संतगण तथा भक्तसमुदाय। दिनांक १ जुभाई, २०१८

श्रीहरि की १८८ मी पूण्यतिथि के अवसर १७५० विकलांग-वृध्ध-बालक-बालिकाओं को
भोजन देते पू.मुनी स्वामी, पू.श्याम स्वामी वगेरे संतगण और स्वयंसेवक. दिनांक २२-६-२०१८

पर्यावरण को जीवंत बनाये रखने के लिए **वडतालधाम** की औरसे पू.श्याम स्वामी, पू.प्रेमनंदन स्वामी तथा स्वयंसेवको द्वारा वडताल,वलेटवा,पीपळाव,नरसंडा,आणंद , तारापुर सहित गांवोमें ५०० से अधिक वृक्षोका **वृक्षारोपण** किया गया । दिनांक १५-७-२०१८

वडतालधाम में श्रावण मासमें आयोजीत अदभूत हिंडोला (झूला) उत्सव की अविस्मरणीय छबियाँ । दिनांक ५-८-२०१८

श्री स्वामिनारायण मंदिर भुलेश्वर-मुंबई (महाराष्ट्र)
आयोजीत श्री गोलोकविहारी महाराज की सार्ध शताब्दी महोत्सव की दिव्य स्मृतियाँ ।

रमणीय मंच का मनोरम्य दृश्य

श्री स्वामिनारायण मंदिर वडताल के संत और स्वयंसेवक भाईओने असह्य गरमी के दिनों मे
समग्र चरोतर विस्तार में (वर्तमान आणंद ओर खेडा जिलाके गांवो में)
जरुरतमंद सभीको चप्पल बांटकर लोकसेवा का उमदा परिचय दीया (दिनांक १५-४-२०१८)